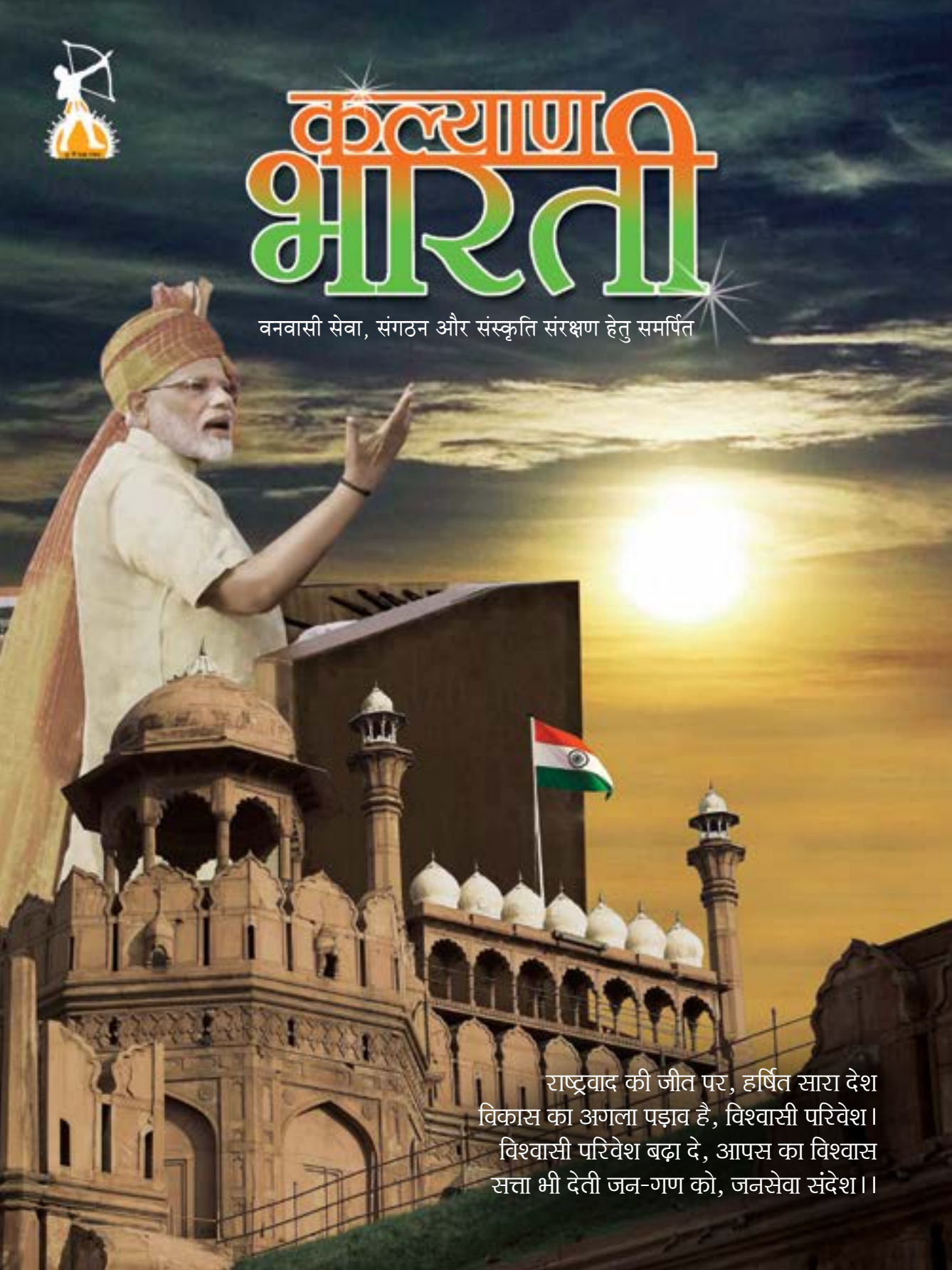

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

राष्ट्रवाद की जीत पर, हर्षित सारा देश
विकास का अगला पड़ाव है, विश्वासी परिवेश।
विश्वासी परिवेश बढ़ा दे, आपस का विश्वास
सत्ता भी देती जन-गण को, जनसेवा संदेश।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 30, अंक 2
अप्रैल-जून 2019 (विक्रम संवत् 2076)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गांधी रोड, बांगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता - 7
दूरभाष : 2268 0962, 2273 5792

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
13/14, डबसन लेन, 4 तल्ला
गुलमोहर पार्क के पास
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
विश्वनाथ बिस्वास

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor: Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय... 2
- जनजातियों का प्रताप को सहयोग... 3
- वृक्षारोपण : कल्याण आश्रम .. 4
- सांसद अभिनन्दन समारोह... 4
- गरीबों की अमीरी 5
- धरती का भगवान : बिरसा मुंडा... 6
- बंगलुरू में प्रचार आयाम... 7
- ऐसे कितने ठेकेदार होंगे ... 9
- माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक ... 9
- स्मृतियों के झरोखों से 10
- जगद्गुरु शंकराचार्य जी का... 12
- कल्याण आश्रम द्वारा केन्द्रीय मंत्री ... 12
- शोक संवाद... 13
- उत्तर पूर्व नगर का वार्षिकोत्सव... 14
- केशिअरी ग्राम में कौशल ... 14
- महिला चेतना शिविर ... 14
- अखिल भारतीय महिला ... 15
- अभिनंदन ... 15
- अनुकरणीय... 15
- आगामी कार्यक्रम... 15
- बोधकथा : आलस्य 16
- कविता : भारत की भूमिका सदा... 16

संपादकीय...

यात्रा : विकास से विश्वास तक

इस बार के लोकसभा चुनाव में जातिगत समीकरण पूरी तरह ध्वस्त हो गए। वंशवाद का दुर्ग ढह गया। राष्ट्रवाद और विकास की लहर पर सवार मोदी मैजिक ने विपक्ष के पैरों तले की जमीन हिला दी। पिछली बार से भी बड़ी जीत का लगातार दावा करते रहे मोदी ने न सिर्फ यह साबित किया है, बल्कि यह भी जता दिया है कि भविष्य की राजनीति सिर्फ खोखले नारों पर नहीं होगी। विश्वास की जमीन पर नारे भी चलेंगे और वोट भी पड़ेंगे। इन सबसे ऊपर एक बात निखर कर आई है कि जो देश के लिए खड़ा है उसके लिए देश की जनता खड़ी होगी। राष्ट्रवाद किसी भी जाति और सम्प्रदाय से बड़ा है। **सबका साथ सबका विकास** के नारे पर जनता ने अपने विश्वास की मुहर लगा दी। आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा की इस जीत ने इतिहास रच दिया। इस जीत के कई संदेश हैं। यह साबित हो गया कि काम बोलता है। काम का कोई विकल्प नहीं। श्री नरेन्द्र मोदी जी ने जनता से ऐसा जुड़ाव पैदा किया कि जिसमें जनता अपना नेता नहीं बल्कि अपना हमदर्द देखती है। लोकतंत्र की यही तो खूबी है कि आप जनता को मूर्ख नहीं बना सकते। मोदी ने विकास को ही अपनी विचारधारा के रूप में पेश किया। वास्तविक विकास का स्वरुप सबसे सेक्युलर होता है। वह न हिन्दू होता है न मुसलमान। मोदी ने यह सुनिश्चित किया कि विकास योजनाओं का लाभ सबको बिना भेद-भाव के मिले। बिचौलियों को खत्म कर लाभार्थियों के खाते में सीधे पैसे डालने से गरीबों, वंचितों, उपेक्षितों को आशा की एक किरण दिखाई दी। सामाजिक सुरक्षा और लोक कल्याण के जो भी कार्यक्रम मोदी सरकार ने शुरू किए वे जमीन पर स्पष्ट दिखाई दिए। महिलाओं का एक बड़ा तबका ''बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ'' शौचालय, सफाई और तीन तलाक जैसे प्रयोगों की वजह से मोदी की ओर आकृष्ट हुआ। 'सबका साथ-सबका विकास' जुमला नहीं एक हकीकत बन गया है। इससे पार्टी के जनाधार में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ। भाजपा के परम्परागत मतदाताओं के साथ-साथ समाज के सभी वर्गों के नए मतदाता भी जुड़े। खासकर युवा मतदाता को मोदी सरकार की हाइटेक कार्य प्रणाली बहुत प्रभावित कर रही है। चुनाव जीतने के लिए संगठनात्मक मजबूती बहुत जरूरी है। भाजपा ने इस पर बहुत ध्यान दिया। मोदी-शाह की जोड़ी ने भाजपा सरकार और संगठन को कर्मनिष्ठ योगी की भाँति चलाया और इसी कारण 2014 से भी बेहतर प्रदर्शन किया। मोदी ने अपने कार्यशैली और जीवनशैली से लोगों में यह विश्वास भर दिया कि वह सामान्य नेताओं के विपरीत स्वार्थ और भ्रष्टाचार से ऊपर उठकर देश को विकास की राह पर ले जा रहे हैं। उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ कड़े कदम उठाये और पाकिस्तान को बैक-फुट पर लाकर अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर उसके विरुद्ध समर्थन हासिल किया। आज आतंकवाद के मुद्दे पर पूरा विश्व भारत के साथ खड़ा है। देश के बड़े आतंकी हमलों के लिए जिम्मेदार मसूद अजहर को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अन्तरराष्ट्रीय आतंकी घोषित करना इसका बहुत बड़ा प्रमाण है। उन्होंने चीन को मजबूर किया कि वह मसूद अजहर के मुद्दे पर भारत के साथ आए। कह सकते हैं कि सरकार एक मजबूत, सुरक्षित और समावेशी भारत बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है। इति शुभम् ❑

-स्नेहलता बैद

जनजातियों का महाराणा प्रताप को सहयोग

- राजेश गोराणा

जीवन के शाश्वत मूल्य, धर्म, संस्कृति और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हिन्दुस्तान में आदिकाल से ही जनजातीय एवं वनवासी समाज बन्धुओं का योगदान अविस्मरणीय रहा है। मुगल आततायियों के विरुद्ध महाराणा प्रताप के संघर्ष में पग-पग पर उनके साथ खड़े ये जनजातीय बन्धु बड़े से बड़ा बलिदान देने में भी कहीं किसी से पीछे नहीं रहे हैं। एक प्रकार से राणा प्रताप के संघर्ष की सफलता के नेपथ्य में इसी जनजातीय समाज का साहचर्य, सम्बल, निष्ठा एवं त्याग है।

भीलू राणा पूंजा के नेतृत्व में हल्दीघाटी युद्ध एवं परवर्ती मेवाड़ के सैन्य अभियानों में जिस शौर्य का प्रदर्शन इस टुकड़ी ने अपनी पारम्परिक छापामार युद्ध नीति (पर्वतीय युद्ध कौशल) से कर मुगल सेना को बारम्बार आतंकित किया, वह घटनाक्रम इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है। भीलू राणा पूंजा के नेतृत्व में सम्पूर्ण जनजातीय समाज ने जिस सूझबूझ और एकान्तिक निष्ठा से महाराणा का साथ दिया है, मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए असीम त्याग और बलिदान किया है, वह आज भी अपने धर्म, धरा, संस्कृति और जननी की रक्षार्थ सर्वस्वार्पण करने की प्रेरणा प्रदान करता है। अरावली पर्वमाला के रक्षक-पोषक सरदार ''भोमिया सरदार'' कहलाते थे। भूमि पर अपने स्वत्व ''भोम'' के कारण ये ''भोमिया'' भी पुकारे जाते थे। अपनी वीरता से आधिपत्य किए पर्वतीय क्षेत्र का नाम इसी कारण **'भोमट'** पड़ गया। प्रताप के अनन्य सहयोगी एवं आन्तरिक सुरक्षा के प्रमुख रहे भोमट (जनजातीय साम्राज्य) के प्रधान ठिकानों में उमरिया, जूडा, मेरपुर, ओगणा, पानरवा, मादड़ी, पहाड़ा, जवास, छाणी, पाटिया, थाना, खेरवाड़ा और कोटड़ा प्रमुख रूप से सम्मिलित हैं।

भीलू राणा पूंजा का जन्म 5 अक्टूबर 1544 ई. पानरवा (भोमट का क्षेत्र) में हुआ था। ये आगे जाकर इस भोमट क्षेत्र के ठिकानेदार बने। राणा प्रताप के भीष्म प्रतिज्ञा से प्रभावित होकर राणा पूंजा अपने जनजातीय धनुर्धरों की टोली के साथ मेवाड़ के स्वातंत्र्य समर में कूद पड़े। प्रताप के वनवास काल में हर जगह प्रताप के परिवार की सुरक्षा एवं सुरक्षित ठिकानों पर उनके रहवास की चिंता, यही जनजातीय समाज करता रहा था। यही कारण रहा कि सात बार ससैन्य प्रयत्नों के बाद भी अकबर महाराणा प्रताप या उनके परिजनों की छाया तक भी नहीं पहुंच पाया। प्रताप ने अपने युवराज काल में चित्तौड़ के किले की तलहटी में अपने निवास के दौरान ही इस जनजातीय समाज की शक्ति, निर्भीकता, स्वाभिमान, आत्मविश्वास, निष्ठा और समर्पण को परख लिया था। प्रताप ने उनको अपना लिया और इस समाज ने भी युवराज प्रताप को सिर आँखों पर बिठाकर प्यारा सा संबोधन दिया था **'कीका'**। प्रताप का उपनाम 'कीका' इसी समाज की देन है। चित्तौड़ से विकसित हुआ यह संबंध प्रताप के सम्पूर्ण संघर्ष काल में और प्रगाढ़ होता चला गया क्योंकि इस समाज ने अपने त्याग, समर्पण, सैनिक गुण, वचनबद्धता, पहाड़ी रास्तों के ज्ञान, पहाड़ों-झाड़ियों-दुर्गम वनों को लांघ जाने की अद्वितीय क्षमता के कारण प्रताप के हृदय में अपने लिए विशिष्ट स्थान बना लिया था। प्रताप के संकेत मात्र पर अपनी फसलों को स्वयं उजाड़कर, अपने फले-फूले रहवास को सूना कर वनों में उतर

जाने का स्तुत्य सामर्थ्य इसी जनजाति समाज ने एक बार नहीं अपितु मेवाड़ पर हुए हर आक्रमण के समय दिखाया है। हल्दीघाटी युद्ध में झालामान द्वारा राजचिह्न धारण कर महाराणा प्रताप को पहाड़ों पर मोर्चेबन्दी के लिए जाते समय राणा पूंजा मुगल सेना के बीच दुर्भेद्य दीवार बन गया था, जिसे मुगल सेना भेद नहीं पायी थी। जनजातीय समाज के इसी विलक्षण समर्पण को सम्मान देते हुए मेवाड़ के राजचिह्न में सशस्त्र सैनिक की सन्नद्ध मुद्रा में भील सैनिक सुशोभित है। राणा पूंजा और उनकी जनजातीय सैन्य टुकड़ियों ने मेवाड़ के स्वातंत्र्य समर में जो अविस्मरणीय योगदान दिया है वह इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। (समुत्कर्ष से साभार) ❑

सांसद अभिनन्दन समारोह

दिनांक 14 जून 2019 को जनजाति क्षेत्र से भाजपा समर्थित नवनिर्वाचित केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुन मुण्डा एवं सांसद श्री सुदर्शन भगत, श्री संजय सेठ, श्री सुनील सोरेन तथा राज्यसभा सांसद श्री समीर उराँव जी का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। खूंटी सांसद सह केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि यह हमारी जीत नहीं बल्कि जनता की जीत है। हमें जो जनादेश मिला है उसका लाभ लोगों तक पहुँचे, इसका ख्याल रखना है। काम करें और समय का भी मूल्यांकन करें। जनजाति समाज व उनकी समस्याएँ इन विषयों पर वनवासी कल्याण केंद्र वर्षों से काम कर रहा है। आपके अनुभव का लाभ मंत्रालय को मिले ऐसा प्रयास रहेगा। लोहरदगा सांसद सुदर्शन भगत ने कहा कि कार्यकर्ताओं के परिश्रम का फल है, जो आज झारखण्ड बेहतर स्थिति में है। दुमका के नवनिर्वाचित सांसद सुनील सोरेन ने कहा कि यह जीत हमारी नहीं आपकी है। राँची के सांसद श्री संजय सेठ एवं राज्यसभा सांसद श्री समीर उरांव ने भी सभा को संबोधित किया। ❑

वृक्षारोपण : कल्याण आश्रम की प्राथमिकता

भारतीय विचार कहता है कि प्रकृति के साथ तालमेल पूर्वक रहो और इससे बिल्कुल उल्टा पश्चिम का विचार प्रकृति के शोषण और उपभोग का हिमायती है। जीवन में प्रकृति से अपने उपभोग के लिए हम लेते ही रहते हैं। तभी तो यह पर्यावरण संकट दिख रहा है। अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम द्वारा 5 जून को विभिन्न प्रांतों में एवं गाँवों में वृक्षारोपण का आयोजन किया गया। उड़ीसा के कंधमाल में बिंदेश्वरजी साहू (ग्राम विकास प्रमुख) के नेतृत्व में वृक्षारोपण किया गया। असम के तिनसुकिया छात्रावास में भी विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वृक्षारोपण किया गया। दादरा नगर हवेली के बेड़पा गाँव में कार्यकर्ताओं ने वृक्षारोपण कर ग्रामवासियों को पर्यावरण संरक्षण का महत्व समझाया। बड़गड़ प्रखण्ड के बरकोल में शिशु मंदिर, परिसर में अ.भा.वनवासी कल्याण आश्रम के अध्यक्ष मा. जगदेवराम उरांव जी द्वारा वृक्षारोपण किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मा. जगदेवराम उरांव जी ने कहा कि पर्यावरण संतुलित बना रहे इसके लिए वृक्षारोपण करना आवश्यक है। हमें प्रकृति से जीवन मिलता है। झारखण्ड के लोहरदगा में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कृपा प्रसाद सिंह ने वृक्षारोपण किया। आज धरती तप रही है। वृक्षारोपण ही आगामी पीढ़ियों के लिए पर्यावरण संरक्षण का सशक्त उपाय है, इसी भाव को जागृत करना कल्याण आश्रम का ध्येय है। वनवासी समाज में वृक्ष ही देव है ऐसी मान्यता है। *वे मानते हैं कि प्रकृति भगवान का जीवंत रूप है।* ❑

संस्मरण

गरीबों की अमीरी

- अतुल जोग, अ.भा.संगठन मंत्री

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में आसपास के वनवासी ग्रामीण क्षेत्र से बड़ी संख्या में छात्र विद्यालयीन एवं महाविद्यालयीन शिक्षा हेतु आते हैं। उनकी प्राथमिक शिक्षा विभिन्न कारणों से कमजोर रहती है। इस कारण उन छात्रों को दसवीं, बारहवीं की बोर्ड परीक्षा में एवं राज्य की स्पर्धा परीक्षा में अपेक्षित सफलता नहीं मिलती। इस समस्या को बिलासपुर के कल्याण आश्रम की युवा समिति ने समझा और इस हेतु **'निर्माण प्रकल्प'** के नाम से फ्री कोचिंग सेंटर प्रारम्भ किया। शहर में नौकरी, व्यवसाय करने वाले युवा अपने व्यक्तिगत व्यवसाय एवं काम की दौड़धूप करने के बाद समय निकालकर शाम को कोचिंग सेंटर पहुँचते थे और मन लगाकर ऐसे छात्रों को बड़ी मेहनत से पढ़ाते थे। प्रारम्भ में कम छात्रों को लेकर यह प्रयास चला, धीरे धीरे संख्या बढ़ने लगी। 2013 में प्रथम बार 'निर्माण प्रकल्प' के छात्र छत्तीसगढ़ राज्य लोक सेवा परीक्षा के लिए बैठे और 55 छात्र विभिन्न सेवा परीक्षाओं में सफल रहे। उनमें से चार छात्र विभिन्न श्रेणी में अव्वल रहे। इस हेतु मुख्यमंत्री द्वारा विशेष पुरस्कार से उनको सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार राशि लगभग आठ हजार रुपए थी। शायद जिंदगी में प्रथम बार इतनी बड़ी राशि उन छात्रों के हाथ में आयी थी।

चारों मित्र अपनी प्रतिभा के बल पर प्राप्त पुरस्कार से मिली धनराशि को लेकर बाजार गए। मन में बहुत दिनों की इच्छा थी कि कुछ मनपसंद वस्तु खरीदी जाए। चारों मित्रों ने परस्पर चर्चा कर क्या खरीदा ? क्या सोच सकते हैं हम ? उन्होंने वह सारे पैसे देकर एक कम्प्यूटर खरीदा। अपने लिए नहीं साहब, 'निर्माण प्रकल्प' के अपने भाई बहनों के लिए जो वहाँ पढ़ते हैं, ताकि उनका अध्ययन कार्य सुगम व सुचारू रूप से सम्पन्न हो सके। क्या देश के पढ़े-लिखे सम्पन्न परिवार के लोग ऐसा सोच सकते हैं ? आज का युवक पहली सेलरी हाथ में मिलते ही अपने लिए मोबाइल, जूते अथवा कोई मनपसंद अच्छी चीज खरीदेगा। लेकिन उन वनवासी युवाओं ने अपने लिए नहीं, अपनों के लिए सोचा। इसे कहते हैं **'गरीबों की अमीरी'** । ❑

रक्तदान शिविर

पूर्वांचल कल्याण आश्रम की बागबाजार समिति, सिल्वर स्प्रिंग समिति, कुम्हारटोली महिला समिति, द्वारा 21 अप्रैल 2019 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। लगभग 175 महिला-पुरुषों ने रक्तदान किया। मानवता की रक्षा के इस महनीय कार्य में समाज के सभी वर्ग के लोगों ने आंतरिक भाव के साथ भाग लिया। कोलकाता महानगर के संघचालक श्री सुशील राय, श्री जीवनमय बसु, अखिल भारतीय नगरीय प्रमुख श्री शंकर अग्रवाल, डॉ. सुदीप्त राय, श्रीमती अर्चना अग्रवाल एवं स्थानीय महिला-पुरुषों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही। ❑

9 जून
पुण्यतिथि पर विशेष

धरती का भगवान : बिरसा मुंडा

सुगना मुंडा और करमी हातू के पुत्र बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को झारखंड प्रदेश में राँची के उलीहातू गाँव में हुआ था। साल्गा गाँव में प्रारम्भिक पढाई के बाद वे चाईबासा इंग्लिश मिडिल स्कूल में पढ़ने आये। इनका मन हमेशा अपने समाज की ब्रिटिश शासकों द्वारा की गयी बुरी दशा पर सोचता रहता था। उन्होंने मुंडा लोगों को अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये अपना नेतृत्व प्रदान किया। बिरसा मुंडा 19वीं सदी के एक प्रमुख जनजाति क्रान्तिवीर थे। उनके नेतृत्व में मुंडा वनवासियों ने 19वीं सदी के आखिरी वर्षों में मुंडाओं के महान आन्दोलन **उलगुलान** को अंजाम दिया।

मुंडा विद्रोह का नेतृत्व:- 1 अक्टूबर 1894 को नौजवान नेता के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजो से लगान माफी के लिये आन्दोलन किया। 1895 में उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उनके प्रभाव से पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी। 1894 में छोटानागपुर में मानसून के असफल होने के कारण भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की। 1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे किंतु बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुईं।

जनवरी 1900 डोमबाड़ी पहाड़ी पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बड़ी संख्या में औरतें और बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ़्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर में गिरफ़्तार कर लिये गये। '**अबुआ: दिशोम रे अबुआ: राज**' अर्थात 'हमारे देश में, हमारा शासन' का नारा देकर भारत वर्ष के छोटानागपुर क्षेत्र के आदिवासी नेता बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों की हुकुमत के सामने कभी घुटने नहीं टेके, सर नहीं झुकाया बल्कि जल, जंगल और जमीन के हक के लिए अंग्रेजी के खिलाफ 'उलगुलान' अर्थात क्रांति का आह्वान किया, बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 को राँची कारागार में ली। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है। बिरसा मुण्डा की समाधि राँची में कोकर के निकट डिस्टिलरी पुल के पास स्थित है। वहीं उनकी प्रतिमा भी लगी है। उनकी स्मृति में रांची में बिरसा मुण्डा केन्द्रीय कारागार तथा बिरसा मुंडा हवाई-अड्डा भी है। उनकी पुण्यतिथि पर शत-शत नमन..... ❑

बंगलुरू में प्रचार आयाम का प्रशिक्षण वर्ग सफलतापूर्वक सम्पन्न

- प्रमोद पेठकर, अ.भा. प्रचार प्रसार प्रमुख

''वर्तमान समाज में जनजाति समाज की Image (पहचान) अलग है और वास्तविकता अलग है। हमें इसके लिये काम करना है। जनजाति समाज की जो वास्तविकता है वही पहचान बने, यह आवश्यक है। हम जब उन्हें मिलने गाँव में जाते हैं तो वहाँ हमें भारतीय संस्कारों के दर्शन होते हैं। जनजाति बन्धुओं के प्रति सबके मन में गौरव भावना जागृत होनी चाहिए। हमें इसके लिये काम करना है।'' उपरोक्त विचार वनवासी कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य हर्ष चौहान (इंदौर) ने बंगलुरू में आयोजित प्रचार आयाम के अखिल भारतीय वर्ग के समापन कार्यक्रम में व्यक्त किए। 24 राज्यों से 65 कार्यकर्ता इस वर्ग में सम्मिलित हुए। समापन समारोह में बंगलुरू महानगर के अजय भारद्वाज (एथेम बायोसायन्स के चेअरमैन) तथा अमिताभ सत्यम (स्मार्ट एण्ड डिजीटल के चेअरमैन) भी उपस्थित रहे। उन्होंने भी अपने-अपने विचारों द्वारा कल्याण आश्रम के प्रति सद्भावनाएं व्यक्त की। अतिथियों का जनजाति कार्यकर्ताओं ने परम्परागत रूप में स्वागत किया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख प्रमोद पेठकर (दिल्ली) ने वर्ग के आयोजन की भूमिका बताते हुए कहा कि इस वर्ग में प्रचार आयाम का महत्व, सोशल मीडिया की आवश्यकता, डिजिटल डोक्युमेन्टेशन, शॉर्ट फिल्म मेकिंग, मीडिया रिलेशनशिप जैसे कई विषयों पर प्रशिक्षण एवं परिचर्चा का आयोजन किया गया। इसके लिये बंगलुरू के कई तज्ञ व्यक्तियों ने अपनी सेवाएं सहर्ष दी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख अरूण कुमार (दिल्ली) ने भी एक जून, शनिवार को पूरे समय रहकर कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाया। प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसार संबंधी अनेक भ्रांतियों का निराकरण हुआ। सभी सत्रों में कार्यकर्ता बड़े उत्साह से सहभागी हुए। बंगलुरू की व्यवस्था समिति के आतिथ्य पर सभी बड़े प्रसन्न थे। बंगलुरू के समाचार विश्व से जुडे कुछ पत्रकार, प्रतिष्ठित नगरजन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारी तथा देश भर से कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता इस कार्यक्रम के निमित्त पधारे थे। नगर समिति की अध्यक्षा अनिता जी ने मंच संचालन किया और मयूरेश फडके तथा साथी कार्यकर्ताओं ने सभी जिम्मेदारियों को सफलतापूर्वक निभाया। ❑

अमृत वचन

- जो व्यक्ति जिस बात का आचरण नहीं करता, जिस पथ का अनुसरण नहीं करता वह उस बात का उपदेश देने का अधिकारी भी नहीं हो सकता। *-आचार्य महाश्रमण*
- राष्ट्र की एकता को अगर बनाकर रखा जा सकता है तो उसका माध्यम हिन्दी ही हो सकती है। *-सुब्रमण्यम स्वामी*
- इस संसार में देखने के लिए बहुत से खूबसूरत स्थान हैं पर सबसे खूबसूरत है बंद आँखों से अपने भीतर देखना। *-गौतम बुद्ध*

ऐसे कितने ठेकेदार होंगे और ऐसे कितने श्रमिक !

- प्रमोद पेठकर, अ.भा. प्रचार प्रसार प्रमुख

पिछले जून माह की घटना है। कोगदा-पिंपलपाडा के 18 मजदूर एक ठेकेदार के कहने पर महाराष्ट्र के कर्जत तालुका में वनक्षेत्र में खुदाई के काम हेतु आए थे। दो सप्ताह तक उन्होंने वहाँ काम किया। एक बस स्टैण्ड में प्लास्टिक की झोंपड़ी बनाकर अपने बर्तन-सामान रखते थे। रात्रि को खुले में रसोई बनाकर, रात्रि विश्राम करते थे। कुछ दिनों में पानी गिरने लगा तो वह भी बड़ा कठिन हो गया। उनकी यह स्थिति देख पास के गाँव के किसी व्यक्ति ने नए बनाए मकान को अस्थाई निवास हेतु दिया। इस घर में पूजा कर रसोई बनाना शुरू नहीं हुआ है इसलिए हमें चूल्हा जलाना ठीक नहीं ऐसा मानते हुए ये जनजाति बन्धु बाहर चूल्हा बनाकर रसोई करते थे। वर्षा के कारण काम करना भी कठिन हो रहा था। जहाँ कहीं खुदाई करते वहाँ उसमें पानी भर जाता। ठेकेदार कहता ये काम बराबर नही हैं, फिर से करो। शुरू में ठेकेदार ने जो थोड़े बहुत पैसे दिये थे वे भी अब खर्च हो चुके थे। वैसे काम तो हुआ परन्तु ठेकेदार बाकी पैसे दे नहीं रहा था। साथ में जो अनाज था वह भी पूरा हो गया। सारे रास्ते मानो बंद होते दिखाई दिये। वैसे काम ठेकेदार के माध्यम से चल रहा था, परन्तु काम तो वन विभाग का था। सब मजदूर गए वन विभाग के कार्यालय पर, हमारी मजदूरी दीजिए की मांग लेकर। वहाँ कोई ध्यान देने को ही तैयार नहीं था, इसलिये सब जोहार कर आ गए। कुछ दिन तक अन्य कोई सहयोग मिलता है क्या? - मदद मांगते मांगते थक गए। अब दूसरा कोई काम कर धान की रोपाई जितने खर्च के पैसे कमाए। दीपावली के बाद फिर से ठेकेदार को फोन कर के देखा। ठेकेदार का एक ही जवाब,'फिर से काम पर आए, काम करने के बाद पैसे दूंगा।'

कष्टकरी संघटना के **शिराझताई बलसारांनी** इन मजदूरों को 'वयम्' संस्था से सहयोग लेने की सलाह दी। जब सारा विषय वयम् के पास आया तो पहले किया काम जिस वनक्षेत्र में आता है उसे ढूँढा। ठेकेदार के रूप में जिसे मिला उसे तो वन विभाग ने काम ही नहीं दिया था। तब जाकर मुख्य ठेकेदार का पता लगाया गया। इन सभी मजदूरों की ओर से एक फरियाद लिखित रूप में लेकर वन विभाग के सही कार्यालय में दी गई। वन परिक्षेत्र अधिकारी श्री वळवी साहब ने फरियाद की ओर ठीक से ध्यान दिया और ठेकेदार को नोटिस जारी करते हुए सारी मजदूरी देने को बाध्य किया। दिसम्बर में शुरू किये इस काम का अंत होली तक आया। मजदूरों में से दो के बैंक खाते में 90 हज़ार की राशि जमा हुई। अपनी मजदूरी तो मानो, डूब में गई जैसी स्थिति होने के कारण जो कुछ हुआ यह सभी के लिये कल्पनातीत था। सबको बहुत आनंद हुआ। जनजाति क्षेत्र के ये मजदूर वयम् कार्यालय में आए और अपना आनंद व्यक्त कर रहे थे। प्राप्त धनराशि को सबने बाँट लिया और साथ में फोटो भी खींची। मजदूरों की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। इस काम को वयम् जैसी संस्था को दिया इसलिये शिराझताईं को धन्यवाद और वन विभाग के श्री वळवी साहब को भी हम कैसे भूल सकते हैं? उन्हें भी धन्यवाद। ❑

वनवासी कल्याण आश्रम दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वनवासी कल्याण आश्रम, दिल्ली का वार्षिकोत्सव 16 जून 2019 को विवेकानन्द विद्यालय,आनंद विहार दिल्ली में सम्पन्न हुआ। मुख्य वक्ता रा.स्व. संघ केन्द्रीय कार्यकारिणी के सदस्य वरिष्ठ प्रचारक श्री इन्द्रेश जी रहे। अध्यक्षता डॉ. उपेन्द्र कुमार चौधरी ने की। राजस्थान की सहरिया जनजाति के वनवासी बंधुओं ने बहुत मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुति दी।

जनजाति बंधुओं की प्रस्तुति में प्रारम्भ में राई नृत्य, कच्ची घोड़ी नृत्य तथा जंगली पशु पक्षियों के वेश में होली के अवसर पर किया जाने वाला नृत्य था। प्रान्त मंत्री आनंद भारद्वाज जी ने पिछले वर्ष का कार्यवृत्त प्रस्तुत किया। जनजाति बंधुओं के कार्यक्रम इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सहयोग से किये गए। कल्याण आश्रम के अखिल भारतीय पदाधिकारी सुरेश राव कुलकर्णी, प्रमोद पेठकर व भगवान सहाय जी की उपस्थिति से कार्यकर्ताओं में उत्साहवर्धन हुआ। संचालन श्रीमती सीमा ओझा जी ने किया। कार्यक्रम स्थल पर कल्याण आश्रम के साहित्य का वितरण किया गया जिसमें मासिक पत्रिका वनबन्धु भी लोगों को दी गई। ❑

मंचासीन विशिष्ट अतिथिगण

माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक परीक्षाओं में वनवासी छात्रों का शानदार प्रदर्शन

वनवासी कल्याण आश्रम से संलग्न श्रीहरि वनवासी विकास समिति के द्वारा झारखंड में 25 हाईस्कूल संचालित हो रहे हैं। इस वर्ष झारखंड बोर्ड मैट्रिक परीक्षा में कुल 1092 छात्रों ने परीक्षा दी। उनमें से 740 छात्र प्रथम 224 द्वितीय श्रेणी में पास हुए। 99 छात्रों को 85 प्रतिशत से अधिक अंक मिले। सुदेश कुमार को 95 प्रतिशत अंक मिले।

जनजाति समाज के सलगी के स्कूल की बिरस मुनी कुमारी 91.2 प्रतिशत, अमरजीत उरांव 90.8 प्रतिशत रोहित उरांव 90.2 प्रतिशत अंक मिले। ये विद्यालय वनवासी गाँवों में चलते हैं। ये छात्र ट्यूशन को नहीं जाते। इन स्कूलों के शिक्षकों को सरकारी वेतन नहीं मिलता। कल्याण आश्रम द्वारा संचालित नागालैण्ड में जेलियांग हेरक्का हाईस्कूल के छात्र शत-प्रतिशत उत्तीर्ण हुए। सभी छात्रों के प्रयास सराहनीय रहे।

आप कल्पना भी नहीं कर सकते इतने सीमित साधनों में ये विद्यालय चलते हैं। विद्यालय चलते हैं शिक्षकों की कड़ी मेहनत पर एवं छात्रों की लगन पर। निरन्तर शिक्षा के प्रति जागरुकता एवं प्रयास होने के कारण सभी विद्यालयों में परिणाम बहुत अच्छे आ रहे हैं। विद्यार्थियों की सफलता पर शुभेच्छा एवं शिक्षकों की नि:स्वार्थ सेवा को शत् शत् नमन। ❑

स्मृतियों के झरोखों से ...

- श्याम गुप्त

(1952 वनवासी कल्याण आश्रम का प्रारंभ हुआ, तब परिस्थितियां अत्यंत विषम थी। उस काल में वनवासियों के मध्य कार्य करना बहुत दुष्कर था। प्रतिकूल परिस्थितियों के मध्य किस प्रकार सेवा और संगठन के इस कार्य को गति मिली, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वावलम्बन के प्रकल्प खड़े किए गये आदि विषयों की सटीक जानकारी प्राप्त करते हैं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक माननीय श्याम जी गुप्त की कलम से जिन्होंने वर्षों तक क्षेत्रीय संगठन मंत्री के रूप में कल्याण आश्रम को अपनी सेवाएं प्रदान की है। सं.)

प्रिय बंधु भगिनी,

अभी कुछ दिन पहले एक सज्जन ने मेरी आयु पूछी। मैंने ज्यों ही 76 वर्ष बताया वे चौंक गए। उनके मुख से निकला ''76 वर्ष! लगता तो नहीं है।'' मुझे भी उनके हाव भाव से आश्चर्य हुआ। किंतु विचार प्रक्रिया ने एक नए विचार को जन्म दिया। मैं सोचने लगा कि अब मैं Bonus Age में आ गया हूँ। पता नहीं कब घंटी बज जाए। तो फिर एकल की जन्म से लेकर आज तक की कहानी कौन सुनाएगा। आज से प्रारम्भ कर रहा हूँ। आपका आशीर्वाद चाहिए।

कहानी प्रारम्भ होती है सन 1975 से। जब पूरे देश में इमरजेंसी लगी थी। समाज पर तत्कालीन प्रधानमंत्री के अत्याचार सीमा लाँघ गए थे। 1978 के चुनाव में इन्दिरा जी हार गयी थी। जनता पार्टी जो जेल में ही बनी थी, उसकी सरकार बन गयी। किंतु बहुत शीघ्र ही जनता पार्टी में परस्पर वैमनस्य निर्माण हो गया और केंद्र में परस्पर खींचातानी के कारण सरकार कोई भी कठोर निर्णय लेने में असमर्थ हो गयी। यही वह अवस्था होती है जब राष्ट्रविरोधी ताक़तें अपना सर उठाती हैं।

दूसरी घटना 1986 की है। राजीव गांधी प्रधानमंत्री बन गए थे। उन्होंने सोनिया से विवाह ईसाई पद्धति से किया था। अत: पूरा परिवार ईसाई बन गया था। सरकार ने वेटिकन सिटी के पोप को भारत आने के लिए आमंत्रित किया था। जब पोप से यह पूछा गया कि भारत यात्रा का उद्देश्य क्या है तो उन्होंने स्पष्ट घोषणा की ''भारत में करोड़ों लोग हैं जिनकी आत्मा अंधकार में भटक रही है। मैं उनको प्रकाश दिखाने जा रहा हूँ।'' इसका अर्थ सब को अच्छी तरह से समझ में आ गया था। और जब उनका भारत में पहला कार्यक्रम राँची में घोषित हो गया और उसका लक्ष्य भी स्पष्ट रूप से घोषित हुआ कि उनकी उपस्थिति में एक लाख वनवासियों का धर्मान्तरण किया जाएगा तो सभी हिन्दू संगठनों में मानों आग लग गयी। अखिल भारतीय कल्याण आश्रम के नेतृत्व में बहुत बड़ा आंदोलन प्रारम्भ हो गया। सैंकड़ों स्वयंसेवकों ने घर छोड़ा। गाँव-गाँव जाकर वनवासी समाज को जागृत किया। ईसाई समाज ने विरोध किया। परिणाम स्वरूप आंदोलन हिंसक हो गया। प्रदेश में कांग्रेस की सरकार और केंद्र में भी राजीव सरकार। उनकी ओर से स्थानीय कमिश्नर पर दबाब आ रहा था और कमिश्नर उतनी ही कठोरता से पोप के राँची आगमन का विरोध कर रहा था। स्थिति यह बन गयी कि पोप को राँची हवाई अड्डे से ही वापिस जाना पड़ा। आप कल्पना कर सकते हैं कि स्थानीय हिन्दू समाज में कितना उत्साह निर्माण हुआ होगा। यह कार्यकर्ताओं की निष्ठा और समर्पण की विजय थी। इस कहानी को

आगे बढ़ाने के पूर्व कुछ घटनाओं का ज़िक्र करना . जरूरी है। सन 1948 की बात है। देश आज़ाद हो गया था। नेहरु जी प्रधानमंत्री बन गए थे। पूरे देश में उनके स्वागत के बड़े बड़े कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे थे। ऐसे ही वक़्त एक कार्यक्रम आज के छत्तीसगढ़ तथा झारखंड की सीमा पर आयोजित था। सार्वजनिक सभा में बहुत बड़ी संख्या में जनता उपस्थित थी। अचानक कुछ लीगों ने नेहरु जी को काले झंडे दिखाना शुरू कर दिया। नेहरु जी का स्वाभाव ग़ुस्सा वाला होने के कारण सभा बीच में ही रोक दी गयी। और जो लोग काले झंडे दिखा रहे थे उनको बुला कर उनसे पूछा गया कि वे लोग क्यों नाराज़ हैं?

उनका उत्तर था कि देश आज़ाद हुआ तो हिंदुओं को मिला हिंदुस्तान और मुसलमानों को मिल गया पाकिस्तान। हम ईसाइयों को चाहिए इंगलिशस्तान। नेहरु जी की आँखें खुल गयीं। सुप्रीम कोर्ट के जज नियोगी जी के नेतृत्व में एक कमीशन बैठाया गया। उसकी रिपोर्ट में साफ़ साफ़ लिखा गया कि देश में चर्च का एक ही मक़सद है। धर्म बदल कर देश का विभाजन। यह काम झारखंड मुक्ति मोर्चा के बैनर पर चलता था।

सन 1980 में जब यह प्रस्ताव तत्कालीन प्रधान मंत्री मोरारी जी देसाई जी के सामने भी रखा गया जिसका समर्थन मदर टेरेसा ने भी किया। मोरार जी ने इस प्रस्ताव को पूरी तरह से ख़ारिज कर दिया। इसके विरोध में झारखंड के कोलहन क्षेत्र में भारी हिंसा हुई।

1986 की ही बात है। युवा प्रधानमंत्री राजीव जी ने संसद में एक बिल पास किया कि 10 वर्ष में पूरे भारत में निरक्षरता समाप्त कर दी जाएगी। किंतु शिक्षा विभाग ने राजीव जी को बताया कि इसके लिए कार्य योजना क्या होगी। हमने गाँव गाँव में तो स्कूल खोल दिए हैं। किंतु न तो अध्यापक वहाँ पढ़ाने जाता है। और न ही विद्यार्थी वहाँ पढ़ने आते हैं। तो निरक्षरता दूर कैसे होगी?

एक और कठिनाई का भी ज़िक्र किया गया। जब हमारे अध्यापक गाँव वालों से आग्रह करते हैं अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए, तो वे पूछते हैं कि इससे क्या लाभ होगा तो अध्यापक कहता है कि पढ़ लिख कर तुम्हारा बेटा अच्छा आदमी बन जाएगा। तो गाँव वाले हँसते है। क्योंकि वे जानते हैं कि सारा भ्रष्टाचार तो पढ़े लिखे लोग ही तो करते हैं। फिर अध्यापक उत्तर देता है कि पढ़ लिख कर बेटे को नौकरी मिल जाएगी तो गाँव वाले और ज़ोर से हँसते हैं। क्योंकि उनको मालूम है कि कितने पढ़े लिखे नौजवान बेकार घूम रहे हैं। फिर गाँव वाले अध्यापक से पूछते हैं कि क्या हमारा बेटा पढ़ लिख कर खेत में काम करेगा? तो वह अध्यापक चुप हो जाता है। और इसलिए ग्रामवासी अपने बच्चों को क्यों विद्यालय भेजेंगे? बेटा खेत में और बेटी घर में सहयोग करते हैं। फिर वह काम कौन करेगा?

इसका समाधान खोजने के लिए राममूर्ति कमीशन गठित किया गया। राममूर्ति जी विनोबा आंदोलन के प्रसिद्ध कार्यकर्ता थे। उन्होंने अपनी रिपोर्ट में One Teacher One School की सिफ़ारिश की थी। वही आगे चल कर कल्याण आश्रम का प्रमुख प्रकल्प एक शिक्षक एक विद्यालय अर्थात एकल विद्यालय के नाम से प्रचलित हुआ। ❑

जगद्गुरु शंकराचार्य जी का कार्यकर्ताओं को मार्गदर्शन

- तारा माहेश्वरी

समरसता की गंगा बहाने को प्रतिबद्ध, ज्ञान भक्ति और कर्म की त्रिवेणी, गोवर्धन मठ पुरी पीठ के वर्तमान 145वें श्रीमदजगदगुरु शंकराचार्य स्वामी, श्री निश्चलानन्द सरस्वती जी महाराज का सान्निध्य पूर्वांचल कल्याण आश्रम कोलकाता-हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं को श्रीराम नवमी के पावन दिन प्राप्त हुआ। कोलकाता के जोड़ासांकू स्थित रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय के रथीन्द्र मंच प्रांगण में आयोजित इस भव्य कार्यक्रम में बड़ी संख्या में महानगर के कार्यकर्ता एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम प्रारंभ के पूर्व आपके निजी सचिव श्री प्रभात झा ने आपका विस्तृत परिचय दिया। अपनी तप:पूत वाणी से कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए आपने बताया कि वनवासी समाज एवं नगरीय समाज कभी भी अलग नहीं थे। नगरों में रहने वाले नागरिक भी अपनी प्रौढ़ावस्था

एवं वृद्धावस्था वनों में ही व्यतीत करते थे। अपने अनुभवों से वे सदा वहाँ के निवासियों को समृद्ध एवं उन्नति करते रहे। गुरुकुल परम्पराएं आदिकाल से वनों में ही पोषण पाती रही हैं। भेद तो विदेशियों द्वारा किया गया। उन्होंने छल बल एवं प्रलोभन से भोले-भाले वनवासियों का धर्मान्तरण करवाया। हमें पुन: उनके धर्म एवं आस्था की जड़ों का सिंचन करना होगा। पूज्यपाद ने सभी से आग्रह किया कि वे प्रतिदिन कम से कम एक घंटे का समय सेवा कार्य में नियोजित करें। उनकी मधुर एवं ओजस्वी वाणी से कार्यकर्ताओं की वनवासी सेवा कार्यों के प्रति निष्ठा एवं लगन और प्रगाढ़ हुई है। कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात सभी को प्रसाद दिया गया। पूरा परिवेश एवं सभी के मनोभाव अध्यात्म एवं सेवाभाव से परिपूरित हो गये। ❑

कल्याण आश्रम द्वारा केन्द्रीय मंत्री स्मृति ईरानी का अभिनंदन

केन्द्रीय बाल एवं महिला विकास मंत्री स्मृति ईरानी का कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं ने भावभीना अभिनंदन किया। अखिल भारतीय महिला प्रमुख श्रीमती माधवी जोशी, राजस्थान प्रांत की कार्यकारी अध्यक्षा श्रीमती राधिका लड्ढा तथा महिला समन्वय प्रमुख सुश्री गीता ताई मुंडे ने उन्हें शॉल एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। ❑

शोक संवाद

■ प्रकाश कामत का परलोक गमन.....

संघ के प्रचारक तथा वनवासी कल्याण आश्रम के पूर्व अखिल भारतीय ग्राम विकास प्रमुख श्री प्रकाश कामत दिनांक 21 अप्रेल 2019 को इस भूलोक से परलोक की यात्रा पर चल पड़े। कुछ समय पूर्व पटना में आपको पक्षाघात (पैरालिसीस) होने के कारण बेलगाव (कर्नाटक) में उपचार चल रहे थे। योगानुयोग श्री बाला साहब देशपाण्डे जी के स्मृतिदिन पर ही आपने अंतिम श्वास ली।

प्रकाश जी इंजीनियरिंग के गोल्ड मेडलिस्ट छात्र और कर्नाटक से संघ कार्य हेतु निकले प्रचारक कार्यकर्ता थे। प्रारम्भ में कर्नाटक के विविध स्थानों पर आपने संघ का काम किया। आप कर्नाटक में कल्याण आश्रम के संस्थापक सदस्य रहे। पश्चात झारखण्ड-बिहार राज्यों में क्षेत्र संगठन मंत्री का दायित्व मिला।

आपने जनजाति समाज के बीच बचत गट प्रारम्भ करने हेतु बहुत प्रयास किये। कुछ वर्ष पश्चात आपको अखिल भारतीय ग्राम विकास प्रमुख के रूप कार्य भार सौंपा गया तो सम्पूर्ण देश में इस हेतु प्रवास किया। एक यशस्वी कार्यकर्ता के रूप में आप जाने जाते थे अर्थात जो काम हाथ में लिया वह पूर्ण करने में यशस्वी रहे।

आपके स्वभाव की सहजता सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों के ध्यान में आती थी। जिन जिन व्यक्तियों को मिलने जाते वे कल्याण आश्रम को सहर्ष सहयोग करते थे। उनकी उपस्थिति मात्र से कभी कभी काम सरल हो जाता। प्रकाश कामत की विदाई वनवासी कल्याण आश्रम के सभी कार्यकर्ताओं के लिये एक असहनीय आघात था। कई कार्यकर्ताओं को उन्हें न मिलने का अत्यंत दु:ख हुआ। उनके अंतिम संस्कार के समय संघ के सह सरकार्यवाह, अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख, सह क्षेत्र प्रचारक, प्रांत प्रचारक जैसे संघ के अधिकारी और वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री अतुल जोग, क्षेत्र हितरक्षा प्रमुख, क्षेत्र महिला प्रमुख सहित कर्नाटक प्रांत के अध्यक्ष तथा सभी अधिकारी उपस्थित थे। कई जनजाति कार्यकर्ता भी अंतिम दर्शन करने श्रृंगेरी आए थे। परमात्मा उनकी पवित्र आत्मा को सद्गति प्रदान करें- यही प्रार्थना ! ❑

■ साल्टलेक समिति के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री भागीरथ जी काजड़िया का स्वर्गवास 7 अप्रैल 2019 को हो गया।

कल्याण आश्रम परिवार दोनों दिवंगत आत्माओं के प्रति सभी कार्यकर्ताओं की ओर से अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करता है। ❑

उत्तर पूर्व नगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पूर्वांचल कल्याण आश्रम उत्तर पूर्व नगर का वार्षिकोत्सव पूर्वांचल विद्या मन्दिर सभागर में हिन्दू नव वर्ष विक्रम संवत 2076, 6 अप्रैल 2019 को आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भारत सेवाश्रम संघ के **अखिल भारतीय महामंत्री श्री दिलीप महाराज** ने की। वस्तुत: भारत सेवाश्रम भी वनांचलों में जनजाातियों के लिए सेवा के कार्य करता है। कल्याण आश्रम द्वारा वनवासी क्षेत्रों में कार्य की शुरूआत के लिए कार्यकर्ताओं को बहुत संघर्ष करना पड़ता था। शिक्षा दिलाने के लिए बच्चों को बुलाकर लाना और दिखाना पड़ता था। किन्तु बच्चे कल्याण आश्रम के सान्निध्य में रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वनवासी समाज के कार्य से निरंतर जुड़ रहे हैं। कार्यक्रम में नववर्ष के उपलक्ष्य में विक्रम संवत युगे युगे नाटिका प्रस्तुत की गई, जिसमें विक्रमादित्य के पराक्रम की प्रस्तुति के साथ-साथ भारतीय कालगणना की वैज्ञानिकता का वर्णन किया गया। नाटिका का निर्देशन **राजकुमार जैन एवं लेखन निशा अग्रवाल** ने किया। मंच पर अखिल भारतीय नगरीय मंत्री श्री शंकर अग्रवाल एवं संरक्षिका उमा सुराणा उपस्थित थी। संचालन श्रीमती शशी मोदी ने किया। महेश मोदी, प्रदीप तुलस्यान, शकुन्तला अग्रवाल, अनिता तुलस्यान, शशि अग्रवाल आदि ने कार्यक्रम को सफल बनाया। पूरा हॉल खचाखच भरा हुआ था। नाटक की प्रस्तुति कल्याण आश्रम परिवार के सदस्यों एवं बच्चों द्वारा की गई जिसकी सभी दर्शकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। ❑

केशिअरी ग्राम में कौशल विकास के प्रयास

बंगाल के केशिअरी ग्राम में प्रथम बार पूर्वांचल कल्याण आश्रम के प्रयास से वनवासी बालिकाओं के कौशल विकास हेतु प्रयास किया गया है। 17 जून से 7 जुलाई 2019 तक चलने वाले इस प्रशिक्षण वर्ग में बड़ी संख्या में वनवासी बहनों ने भाग लिया। इस कार्य में उनकी बहुत रुचि दिखाई दी। पढ़ाई के साथ-साथ कौशल विकास का प्रयास उनके स्वावलम्बन की दिशा में बहुत उपयोगी कदम साबित होगा। नगर कार्यकर्ताओं का इस दिशा में प्रयास सराहनीय है। हमारी कामना है कि ऐसे प्रशिक्षण निरन्तर चलते रहें। ❑

महिला चेतना शिविर

लोहरदगा:- दिनांक 11-13 जून 2019 को वनवासी कल्याण केन्द्र, लोहरदगा संभाग का महिला चेतना शिविर लोहरदगा में सम्पन्न हुआ। शिविर का उद्घाटन मा. कृपा प्रसाद सिंह जी (उपाध्यक्ष - अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम), अखिल भारतीय सह महिला प्रमुख बीणापानी दास शर्मा, क्षेत्र महिला प्रमुख सुलेखा कुमारी, प्रांत महिला प्रमुख ललिता कुमारी ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस शिविर में 42 नवीन एवं 14 अंशकालीन महिलाओं ने भाग लिया। प्रांत सहसंगठन मंत्री श्री कैलाश उरांव, ब्रजमणि पाठक, मधुबाला कुमारी आदि उपस्थित थे। ❑

अखिल भारतीय महिला कायकर्ता बैठक

तीन दिवसीय अखिल भारतीय महिला कार्यकर्ता बैठक भाग्यनगर (हैदराबाद) में 31 मई से 2 जून 2019 तक सम्पन्न हुई। 36 प्रांतों से 94 महिलाओं की सहभागिता रही। विभिन्न सत्रों में महिला कार्य एवं उसके परिणामों की चर्चा हुई। आगामी वर्ष की कार्य योजना बनी।

इस बैठक की यह विशेषता थी कि नगरीय, ग्रामीण और वनवासी सभी महिलायें एक साथ बैठकर विचार-विमर्श कर रही थीं। बैठक में अखिल भारतीय उपाध्यक्ष श्री कृपा प्रसाद सिंह, अखिल भारतीय संगठनमंत्री श्री अतुलजी जोग, अखिल भारतीय महिला प्रमुख श्रीमती माधवी जी, सह प्रमुख वीणा दीदी उपस्थित थीं। कोलकाता से उषा अग्रवाल एवं हावड़ा से अनिता अग्रवाल इस बैठक में गई थीं। ❑

••• अभिनंदन •••

वनवासी कल्याण आश्रम के छात्रावास रहकर शिक्षा ग्रहण करने वाली केरल राज्य की कुमारी बेलमणी अपने जनजातीय गाँव अट्टापड़ी की पहली डॉक्टर बनी। ❑

अनुकरणीय

काकुड़गाछी समिति की सक्रिय समर्पित पूर्व कार्यकर्ता श्रीमती संगीता कालिया ने अपनी बहू का पुनर्विवाह करवाकर निश्चित रूप से एक सराहनीय एवं प्रेरणास्पद कार्य किया है। कैंसर से जूझते अपने एक मात्र पुत्र को खो देने के बाद उन्होंने पुत्रवधू को नए सिरे से जीवन जीने की राह दिखाकर उसकी झोली खुशियों से भर दी। संगीता जी को हम सभी कार्यकर्ताओं की तरफ से बधाई एवं अभिवादन! ❑

आगामी कार्यक्रम

- कल्याण आश्रम की महिला कार्यकर्ताओं ने रक्षाबंधन के पूर्व वनवासी कार्यकर्ताओं और ग्रामवासियों को रक्षासूत्र बाँधने के लिए 1 लाख राखियाँ बनाने का संकल्प लिया है।
- लेकटाऊन समिति द्वारा प्रदर्शनी सह-बिक्री कार्यक्रम का आयोजन आगामी 20 से 22 जुलाई 2019 तक गोकुल बैंक्वेट में किया जाएगा।
- कोलकाता महानगर युवा समिति द्वारा आगामी 14 जुलाई 2019 को सुन्दरवन के समीप फलदार वृक्ष लगाए जाएंगे। ग्रामवासियों को वृक्षों के महत्व एवं उपयोगिता के सन्दर्भ में भी बताया जाएगा।
- 7-10-13-14-15-20 और 21 जुलाई 2019 को केशियारी ब्लॉक के गाँवों में कोलकाता-हावड़ा की विभिन्न समितियों द्वारा 20 हजार फलों के पेड़ लगाने का निश्चय किया गया है। ❑

बोधकथा.....

आलस्य

गुरु और शिष्य दोनों सो रहे थे। वर्षा का मौसम था। गुरु ने करवट बदलकर शिष्य से कहा-बाहर जाकर देखो कि वर्षा आ रही है या रुक गयी है? शिष्य आलसी था। उठने की इच्छा नहीं थी। उसने तर्क का प्रयोग करते हुए कहा-गुरुदेव! अभी-अभी यह कुत्ता बाहर से आया है। आप इसके शरीर पर हाथ फेरकर देख लें। यदि इसका शरीर भीगा हुआ है तो वर्षा आ रही है, यदि यह सूखा हो तो वर्षा बन्द हो गयी है। सरल उपाय है।

थोड़ी देर बाद गुरु ने कहा-शिष्य! रात बहुत चली गयी है। नींद नहीं ले पा रहा हूँ। दीये का प्रकाश सीधा मुंह पर पड़ रहा है। उठो, दीये को बुझा दो। शिष्य बोला - गुरुदेव! दीया क्यों बुझाएं, आप अपने मुँह पर कपड़ा ओढ़ लें, प्रकाश नही दिखेगा, नींद आ जाएगी।

कुछ समय बीता, हवा तेज चलने लगी। गुरु ने कहा-'अरे, उठकर दरवाजा बन्द कर दो। सर्दी के मारे ठिठुर रहा हूँ।' शिष्य ने सोते-सोते ही कहा- 'गुरुदेव! मैं दरवाजे से बहुत दूर सोया हुआ हूँ। आप पास में ही हैं। पैरों से धक्का दें, दरवाजा बन्द हो जायेंगे।' गुरु ने वैसा ही किया। फिर दरवाजे खुलने लगे। गुरु ने कहा- शिष्य! अब उठकर दरवाजे के अर्गला लगा दो। 'शिष्य तड़ककर बोला-तीन काम मैंने कर दिये तो एक काम आप ही कर दें।'

आलसी व्यक्ति के पास कार्य न करने के हजार बहाने होते हैं। ❑

कविता.....

भारत की भूमिका सदा ही जनकल्याणी होगी

- लक्ष्मीनारायण भाला

भारत की पहचान का अगर,
हो जाये बिखराव।
मानव के कल्याण का,
धरा रह जायेगा भाव।।

इसी भाव को पुष्ट करेंगे,
सबका हो संकल्प।
भारत का बन पाएगा नहीं,
कोई और विकल्प।।

गीता, गंगा, गौ, गायत्री,
और गाँव के खेत।
पर्यावरण सुरक्षा कर लो,
जंगल हो या रेत।।

भारत की भूमिका सदा ही,
जनकल्याणी होगी।
मानवता ही नहीं,
चराचर सबके हित की होगी।।

राजनीति में जो दल होगा,
एकजुट और नेक।
सत्ता पाने पर भी जिसके,
रहे इरादे नेक।।

अफसरशाही को भी जो दे,
देश-धर्म संस्कार।
भ्रष्ट नहीं कर्तव्य निष्ठ हो,
करे कर्म से प्यार।।

लोकतंत्र से राष्ट्रपुरुष,
भारत का रुप खिलेगा।
जग-कल्याणी कार्य सधे,
एकात्म-भाव विकसेगा।।

उत्तर-पूर्व नगर का वार्षिकोत्सव

विक्रम संवत् दो हजार छियत्तर के आरम्भ पर,
वार्षिक उत्सव के मंचन से गद्-गद् उत्तर पूर्व नगर।
जब प्रकृति का कण-कण नूतन, तभी वर्ष परिवर्तित हो;
यही एक स्वर उच्चारित था नाट्य मंच के भाल पर।

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com

Printed Matter

Book - Post